

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये सप्तनरतितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নारायणीये सप्तनरतितामं दशकम् ॥

উত্তমভক্তিপ্রার্থনা, মার্কণ্ডেয়োপাখ্যানম্ চ

ত্রৈগুণ্যাঙ্কিন্ধরূপং ভরতি হি ভুরনে

হীনমধ্যোত্তমং যৎ

জ্ঞানং শ্রদ্ধা চ কৰ্তা রসতিরপি সুখং

কৰ্ম চাহারভেদাঃ।

ৎরৎক্ষেত্রৎরনিষেৱাদি তু যদিহ পুন -

স্তুৎপরং তত্তু সৰ্বং

প্রাহ্নৈর্গুণ্যনিষ্ঠং তদনুভজনতো

মঙ্ক্ষু সিদ্ধো ভৱেযম্ ॥ 97.1 ॥

ৎরয্যেৱ ন্যস্তচিত্তঃ সুখমযি রিচরন্

সৰ্বচেষ্টাস্তুদৰ্থং

ৎরন্তুজৈঃ সেৱ্যমানানপি চরিতচরা -

নাশ্রযন্ পুণ্যদেশান্।

দসেটৌ রিপ্রে মৃগাদিষ্মপি চ সমমতি -

মূচ্যমানারমান -

স্পর্ধাসূযাদিদোষঃ সততমখিলভূ -

তেষু সম্পূজযে ত্ৱাম্ ॥ 97.2 ॥

ৎরন্তারো যারদেশু স্ফুরতি ন রিশদং

তারদেরং হ্রুপাস্তিৎ

কুর্নৈকাঅ্যবোধে ঝটিতি রিকসতি

ৎরন্মযোহহং চৱেযম্।

दुक्तितृष्ठांतरात्मा
मायादुःखानभिज्जुस्तदपि मृगयते
नूनमाश्चर्यहेतोः ॥ 97.6 ॥

याते रय्याशु राताकुलजलदगल -
त्रोषपूर्णातिघूर्ण -
एसप्तार्णोराशिमग्ने जगति स तु जले
सद्भ्रमन् रर्षकोटीः।
दीनः प्रैम्फिष्ट दूरे रटदलशयनं
कण्डिदाश्चर्यबालं
रामेर श्यामलाङ्गं रदनसरसिज -
न्यस्तपादाङ्गुलीकम् ॥ 97.7 ॥

दृष्टरा ररां हृष्टरोमा रररितमुपगतः
स्पष्टुकामो मुनीन्द्रः
श्रसैनान्तनिरिष्टः पुनरिह सकलं
दृष्टरान् रिष्टपौघम्।
डूयोहपि श्रसरातैर्बहिरनुपतितो
रीम्फितस्त्रुंकटाँक् -
मोदादाम्लेष्टुकामस्त्रुयि पिहिततनौ
स्वाश्रमे प्राङ्गदासीं ॥ 97.8 ॥

गौर्या सार्धं तदग्रे पुरभिदथ गत -
स्त्रुप्रियप्रेम्फणार्थी
सिद्धानेरस्य दरा स्वयमयमजरा -
मृत्युतादीन् गतोहडू।
एरं ररसेरयैर स्मररिपुरपि स
प्रीयते येन तस्मा -

नूर्तित्रय्यात्त्रकञ्जुं ननु सकलनिय -
ञ्जेति सुर्यञ्जुमासीत् ॥ 97.9 ॥

त्र्यंशेष्विन् सत्यलोके रिधिहरिपुरभि -
न्मन्दिराण्यूर्ध्वमूर्ध्वं
तेभ्योऽहप्यूर्ध्वं तु मायारिकृतिरिरहितो
भाति रैकुण्ठलोकः।
तत्र त्रं कारणान्तस्यपि पशुपकुले
शुद्धसत्त्वैकरूपी
सच्चिद्विद्मद्भयात्मा परनपुरपते
पाहि माम् सर्ररोगात् ॥ 97.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तनरतितमं दशकं समाप्तम् ॥